Vol II Issue VI Dec 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 6, Dec. 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

मीडिया और राजनीति के अंतर्संबंधों का मूल्यांकन

धरवेश कठेरिया,[1] शिवांजलि कठेरिया,[2] संदीप कुमार वर्मा [3] तेज बहादुर यादव[4] प्रीति सिंह परिहार[5] प्रमोद पांडेय[6]

[1].सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[2].स्वतंत्र लेखन एवं शोध कार्य में संलग्न, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[3].सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)।
[4].वरिष्ठ पत्रकार, भोपाल (मध्य प्रदेश)।
[5].पत्रकार एवं स्वतंत्र लेखन, पांडव नगर, दिल्ली।
[6].शोधार्थी, संचार अध्ययन एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)।

सारांश

जनसंचार माध्यमों का उद्‍भव सूचनाओं को संप्रेषित करने के उद्देश्य से ही हुआ है। परंतु जैसे–जैसे ये माध्यम विकसित होते हैं इनके उद्देश्य और लक्ष्य व्यवसायिकता से प्रभावित होकर बदलने लगते हैं। वर्तमान समय में समाचार–पत्रों और टेलीविजन चौनलों पर प्रकाशित और प्रसारित समाचारों में लगभग 70 प्रतिशत समाचार किसी न किसी रूप में राजनीतिक मुद्दों से संबन्धित होते हैं। ऐसे में मीडिया और राजनीति के आपसी मतभेद और तालमेल दोनों ही एक–दूसरे के लिए लाभदायक और हानिकारक साबित हो सकते हैं। दोनों ने इसी महत्वपूर्ण आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, आपसी तालमेल बेहतर बना लिए हैं। यह तालमेल और इनका परस्पर आपसी संबंध एक–दूसरे की आवश्यकता को पूरा करता है। जोकि राष्ट्र और राष्ट्र की जनता के हित में कदापि नहीं है। मीडिया अक्सर गंभीर मुद्दों के समाचारों को तबज्जों नहीं देता है और पेड न्यूज जैसे समाचारों को गंभीर बनाकर जनता के समक्ष प्रस्तुत करता है। मीडिया और राजनीतिज्ञों के दायित्व सामाजिक हित में न होना गंभीर चिंतनीय विषय है। इन्हीं बिन्दुओं पर इस अध्ययन में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना :

संचार की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, राजनीतिक अर्थव्यवस्था के शास्त्रीय अध्ययन से गहरे रुप से जुड़ी है। इसका विकास उन्नीसवी सदी में हुआ।[1] मीडिया और राजनीति का संबंध बहुत पुराना है। जनता और जनता के सेवकों के बीच के आपसी संदेशों का आदान–प्रदान करना ही मीडिया का महत्वपूर्ण कार्य है, जोकि मीडिया और राजनीति के अंतर्संबंधों का प्रस्तुतिकरण है। मीडिया का कार्य सूचनाओं का आदान–प्रदान करने के साथ ही संबंधित सूचनाओं पर अपने विचार देना भी है, जोकि गहन विचार और आलोचना के साथ में हो सकता है। आज प्रिंट और इलेक्टानिक मीडिया पर दिखाई जा रही खबरों में लगभग 70 प्रतिशत खबरें सिर्फ राजनीतिक गलियारों से संबंधित होती है। जहां एक तरफ राजनीतिज्ञ अपने वक्तव्य, संदेश, सूचनाएं, विचार, कार्ययोजनाएं एवं उपलब्धियां आदि को आम जनता तक पहुंचाने का कार्य मीडिया के माध्यम से कर रहे हैं, तो वहीं मीडिया भी राजनीतिज्ञों एवं राजनीति का इस्तेमाल कच्चे माल के रूप में कर रही है। जब मीडिया में खबरों की कमी होती है तो राजनीति का ही क्षेत्र एक ऐसा गलियारा है जो मीडिया के लिए हर तरह की खबरों का बंदोवस्त करता हैं। समाचारपत्र और उनसे जुड़ी पत्रकारिता बहुदलीय प्रजातंत्रीय व्यवस्था की उपज है।[2]

राजनीति का क्षेत्र किसी भी राष्ट्र के लिए एक ऐसा क्षेत्र होता है जहां से देश की किसी भी समस्या पर पक्ष या विपक्षी दल के नेताओं–राजनेताओं से विचार या राय ली जा सकती है। राजनीतिक का क्षेत्र मीडिया के लिए हमेशा खबरों की भरपाई करता रहता है। और सबसे बड़ी बात राजनीतिक क्षेत्र की खबरें बड़ी ही आसानी से मीडिया के लिए उपलब्ध रहती हैं। क्योंकि राजनीतिज्ञों का उद्देश्य ही जनता के लिए कार्य करना होता है। इस कारण वे स्वयं खबरों को जनता तक पहुंचाने में सहयोग करते हैं। मीडिया और राजनीति का यह तालमेल दोनों के ही स्वार्थ को लाभ पहुंचाने में मद्‍द करता है। दूसरा लाभ मीडिया को राजनीतिक दलों से सत्ता में रहते हुए, मिलने वाले भरी–भरकम विज्ञापनों से होता है। आज–कल यह चुनाव व्यावसायिक आधार पर किया जाता है।[3] लेकिन जब से समाचारपत्र एक उद्योग बन गया और पत्रकारिता एक पेशा, दोनों में सेवा की भावना घट गयी है। राजनीति में भी ऐसा ही परिवर्तन हुआ है। सेवा भावना की राजनीति का ह्यस हो गया और राजनीति एक व्यवसाय बन गयी।[4] इस दृष्टि से राजनीतिज्ञों और पत्रकारों के बीच मधुर या कड़वे संबंधों की बात बहुत अनहोनी नहीं है।[5] परन्तु पत्रकारिता के माध्यम से सरकार सदैव लाभ उठाती रही है और इसी उद्देश्य से भारत सरकार का एक विभाग अलग से समाचारपत्रों के साथ सम्पर्क बनाये रखने के लिए हमारे यहां सक्रिय है। प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो नामक भारत सरकार के इस विभाग द्वारा दो तरह की भूमिकाएं निभाई जाती हैं। एक ओर सरकार की नीतियों और वक्तव्यों को संवाददाताओं तक पहुंचाया जाता है और दूसरी ओर समाचारपत्रों में जो लोगों की राय प्रकाशित होती है उसे यह विभाग सरकार तक पहुंचाने की जिम्मेदारी निभाता है।[6]

भारत में राजनीति व्यवस्था का ढांचा शहरी समाज व्यवस्था के नीचले पायदान अर्थात किसी वार्ड से आरम्भ होता है और यही व्यवस्था अगर हम ग्रामीण क्षेत्रों में देखे तो पंचायती राज व्यवस्था के रूप में देखने को मिलती है। मोहल्ले के पार्षद से लेकर महापौर, विधायक,

Title: *मीडिया और राजनीति के अंतर्संबंधों का मूल्यांकन*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *धरवेश कठेरिया,[1] शिवांजलि कठेरिया,[2] संदीप कुमार वर्मा [3] तेज बहादुर यादव[4] प्रीति सिंह परिहार[5] प्रमोद पांडेय[6]*
yr:2012 vol:2 iss:6

सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और देश के प्रथम नागरिक, राष्ट्रपति तक बनी है, हालाकि इस राजनीतिक व्यवस्था में राष्ट्रपति का हस्तक्षेप कहीं नजर नहीं आता है। राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में यह भी सत्य है कि आम आदमी से लेकर विशेष व्यक्ति तक कोई भी इस व्यवस्था के बारे में उचित राय रखता नजर नहीं आता है।

यह प्रश्न उठना जायज भी है क्योंकि राजनीतिक गलियारों से लेकर संचार के सभी माध्यमों, चौपालों, पान–ठेलां और शहर के आलीशान वातानुकूलित कॉफी हाउस और प्रेस क्लबों में सिर्फ और सिर्फ दबी–कुचली और पक्ष–विपक्ष के पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं की बेहताशा, खुंखार, जंगल के शेर की तरह दहाड़ती आवाजे, इस देश और देश की संस्कृति से कोशों दूर नजर आती है। इन दहाड़ती आवाजों में लालच, घिनौनापन, बेशर्मी, निजी स्वार्थ और एक–दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति स्पष्ट नजर आती हैा क्या यही हमारे हितैषी हैं?जो अपने–आप में गिर चुके हैं। क्या ऐसे लोग राष्ट्र की जिम्मेदारियों को उठाने योग्य हैं?पता नहीं। लेकिन हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था ने सभी को आजादी दी है। अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इस आजादी का इस्तेमाल कौन किस प्रकार से कर रहा है?इसके उदाहरण लोकसभा टीवी पर आए दिन देखने को मिलते रहते हैं। क्या ऐसी घटनाएं लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा नहीं करती हैं?शायद नहीं, क्योंकि सत्ता के आगे सारी ताकतें कमजोर पड़ जाती हैं, क्योंकि यही हमारा लोकतंत्र है। जो राष्ट्र के हर नागरिक को वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है और स्वतंत्रता भी ऐसी जिसकी सीमाएं अनंत हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड में हम किसी पर भी जूता फेंक सकते है और मार सकते है। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरुपयोग है। लेकिन स्थितियां कैसी भी हों पत्रकारिता में ईमानदारी का बना रहना बहुत आवश्यक है।[7]

पिछले एक दशक की राजनीतिक गलियारों की बात की जाये तो, किसी भी सरकार के किसी भी पद पर कोई भी क्यों न हो, हर तरफ सरकारी कार्य किसी न किसी रूप में नियमों के विरूद्ध पाये जाते है चाहे वह 2जी, 3जी, कोल आवंटन, जमीन होटल, फ्लैट घोटाला, नोट कांड, भर्ती घोटाला, चारा घोटाला, गेहूँ, चावल, यूरिया, तेल, ताज कोरीडोर, नेशनल हाइवे, कॉमनवेल्थ खेल, राष्ट्रीय अनुदान, मनरेगा, राष्ट्रीय सहायता राशि, बाढ़–भूकम्प, मिड–डे मील योजना, आदिवासी कल्याण कोष, आदि, ऐसे इन नियम विरूद्ध कारनामों की लम्बी सूची बनाई जा सकती है।

लेकिन प्रश्न वही है कि इन नियम विरूद्ध कार्यों को करने वालों की कतार भी तो राजनीतिज्ञों के अपनों की है, जो पुत्र–पुत्री से लेकर मामा, साले, जीजा और दोस्तों के आस–पास ही घूमती है। जो केवल इंडिया के लोग है नाकि पूरे हिदुंस्तान के। क्योंकि भारत का नागरिक तो आज भी सरकारी कालोंनियों के चक्कर काट रहा है। और बचे–कूचे समय में अपने लिए एक वक्त की रोटी के बंदोवस्त में लगा रहता है। क्या यही हमारे विकास के मायने हैं?और यही हमारा विकास है कि सरकार के द्वारा किये गये लगभग हर कार्य पर आज प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है?नेता–राजनेता और सरकारी कार्मचारी सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों का सिर्फ और सिर्फ दुरूपयोग करते हुए देश को आगे बढ़ाने के बहाने, इंडिया और हिंदुस्तान के बीच की खाई को बढ़ा रहा है। आम आदमी का सरकार से विश्वास खत्म हो गया है। हर नेता–राजनेता और सरकारी नुमाईंदा सरकार को लूटते हुए खुद को बाहुवली बनाने में लगा है। क्योंकि किसी को कल के भारत या इंडिया की चिंता नहीं है। उसे गरीब के घर में शाम को जलने वाले चूल्हे से मतलब नहीं है। उसे तो बस स्वयं की असीमीति लालसाओं को पूरा करना है। चाहे फिर वह गरीब की दो जून की रोटी छीनकर ही क्यों न हो। यह भारत और इंडिया में अंतर है जो तेजी से बढ़ रहा है। परन्तु समाचारपत्रों पर गम्भीर सामाजिक जिम्मेदारी होती है। जो समाचारपत्र अपने इस दायित्व को नहीं महसूस करते, उन्हें पाठकों का वह सम्मान नहीं मिलता है जो मिलना चाहिए।[8]

सीमाएं:

मीडिया और राजनीति दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। इस अध्ययन में उन तथ्यों की ओर भी ध्यान दिलाना मेरा उदेश्य है, जो मीडिया और राजनीति के परस्पर सहयोग के कारण आम जनता तक पहुंच ही नहीं पाते हैं। साथ ही देश की राजनीतिक व्यवस्था पर कटाक्ष करना मेरा उदेश्य है नाकि इस व्यवस्था के विरोध में लिखना। आज मीडिया और राजनीति के जो परस्पर संबंध देखने को मिल रहें हैं और जिनके कारण बहुत से ऐसे सामाजिक राष्ट्रहित के मुद्दे होते हैं जिनको सही मीडिया कवरेज नहीं मिल पाता है। और वह मीडिया की उपेक्षा के कारण उजागर नहीं हो पाते हैं। इस तरह के कार्य में केवल कुछ मीडिया घराने और कुछ राजनीतिज्ञ ही शामिल हैं, नाकि सम्पूर्ण मीडिया और राजनीतिज्ञ।

सुझाव:

1.मीडिया और राजनीतिज्ञों को अपने दायित्व का निर्वाहन जिम्मेदारीपूर्वक करना चाहिए।
2.मीडिया अपने लोक–हितकारी होने की भूमिका का पालन जनता के हित में करे।
3. राजनीतिक व्यवस्था देश का आईना बदल सकती है, परंतु यह तभी संभव है जब यह व्यवस्था राष्ट्रहित में समर्पित होकर कार्य करे।
4.संचार माध्यम सामाजिक–सांस्कृतिक संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब वह स्वयं के व्यावसायिक हितों को अनदेखा करते हुए ईमानदारी से राष्ट्रहित में कार्य करें।
5.आज जनता को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संचार माध्यमों पर जो भी सूचनाएं और समाचार दिखाये जा रहे हैं उन पर आँख मींच कर विश्वास ना करें।
6.मीडिया को अपने प्रसारण में राजनीतिज्ञों के ऐसे वक्तव्य जो राष्ट्रहित में ना हों, का प्रसारण केवल टीआरपी (टेलीविजन रेटिंग पॉइंट) के लोभ में नहीं करना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों में मीडिया और राजनीति के सम्बन्धों में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना देखने को मिल रही है। इसका सबसे बड़ा नुकसान देश की जनता को हो रहा है। अब जनता के पास पारदर्शी और आलोचनात्मक खबरें नहीं पहुंच रही हैं। क्योंकि मीडिया ने अपने निजी व्यावसायिक हितों की खातिर सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञों से तालमेल बैठा लिया है। इस कारण अब आम जनता के पास केवल गोल–मोल या वो समाचार ही पहुंचती हैं जिसे राजनीतिज्ञ जनता को दिखाने में अपना हित समझते हैं। संचार माध्यमों की यह स्थिति किसी भी राष्ट्र के लिए विनाशकारी ही साबित होगी। इसलिए संचार माध्यमों को अपने नैतिक दायित्वों का पालन पूरी गम्भीरता और समर्पण के साथ करना चाहिए ताकि देश सही मायनों में विकास की राह पर अग्रसर हो सके।

संदर्भ ग्रंथ:

1.रॉबर्ट डब्ल्यू मैक्वेस्नी, इलेन मिकसिंस वुड, जॉन बेलेमी फॉस्टर (संपादक), राजेंद शर्मा (अनुवादक), पूंजीवाद और सूचना का युग, (भूमण्डलीय

संचार क्रांति की राजनीतिक अर्थ व्यवस्था), पृष्ठ सं. 32, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
2.राधेश्याम शर्मा, जनसंचार, (तृतीय संस्करण), पृष्ठ सं. 427, प्रकाशक– हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, हरियाणा, 1999.
3.रेमण्ड विलियंस, सत्यम वर्मा, प्रमोद झा (अनुवादक), संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, पृष्ठ सं. 137, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
4.राधेश्याम शर्मा, जनसंचार, (तृतीय संस्करण), पृष्ठ सं. 431.
5.आलोक मेहता, पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा, पृष्ठ सं. 25, प्रकाशक– सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
6.राधेश्याम शर्मा, जनसंचार, (तृतीय संस्करण), पृष्ठ सं. 469.
7.वही, पृष्ठ सं. 462.
8.रामशरण जोशी (संपादक), मीडिया और बाजारवाद, पृष्ठ सं. 59, प्रकाशक– राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जगतपुरी, दिल्ली, 2002.

सहायक संदर्भ ग्रथः

1.जगदीश्वर चतुर्वेदी, टेलीविजन, संस्कृति और राजनीति, प्रकाशक– अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा.लि., नई दिल्ली, 2004
2.रामशरण जोशी (संपादक), मीडिया और बाजारवाद, प्रकाशक– राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जगतपुरी, दिल्ली, 2002.
3.सुभाष धूलिया, सूचना क्रांति की राजनीति और विचारधारा, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001.
4.प्रो. विपिन चंद्रा, आधुनिक भारत में सांप्रदायिकता, प्रकाशक– हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय– दिल्ली, 1996.
5.जगदीश्वर चतुर्वेदी, माध्यम साम्राज्यवाद, प्रकाशक– अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा.लि., नई दिल्ली, 2002.
6.धनपति पाण्डेय, अनंत अशोक, प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाशक– मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1998.
7.सुधीश पचौरी, टेलीविजन समीक्षाः सिद्धांत और व्यवहार, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
8.सुधीश पचौरी, उत्तर आधुनिक मीडिया विमर्श, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
9.आनंद मित्रा, टेलीविजन एण्ड पापुलर कल्चर इन इंडिया, प्रकाशक– सेज पब्लिकेशन, दिल्ली, 1993.
10.रॉबर्ट डब्ल्यू मैक्चेस्नी, इलेन मिकसिंस वुड, जॉन बेलेमी फॉस्टर (संपादक), राजेंद शर्मा (अनुवादक), पूंजीवाद और सूचना का युग, (भूमण्डलीय संचार क्रांति की राजनीतिक अर्थ व्यवस्था), प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
11.सीन मैकब्राइड, मेनी वायसेज, वन वर्ल्ड, कम्युनिकेशन एंड सोसाइटी टुडे एंड टुमौरो, प्रकाशक– यूनेस्को, पेरिस, 1980.
12.रेमण्ड विलियंस, सत्यम वर्मा, प्रमोद झा (अनुवादक), संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
13.राधेश्याम शर्मा, जनसंचार, (तृतीय संस्करण), प्रकाशक– हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, हरियाणा, 1999.
14.शंभुनाथ, आज का मीडिया–समकालीन सृजन, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
15.गोपाल सक्सेना, टेलीविजन इन इंडिया– चेंज एण्ड चैलेंज, प्रकाशक– विकास पब्लिकेशन, दिल्ली, 1996.
16.मोहनदास करमचंद गांधी, इंडिया ऑफ माइ ड्रीम्स, प्रकाशक– नवजीवन पब्लिसिंग हाउस, अहमदाबाद, 1947.
17.इम्तियाज अहमद, पीएस घोष एवं एच रेडफील्ड, प्लूरलिज्म एण्ड इक्वलिटीः वैल्यूज इन इंडियन सोसाइटी एंड पॉलिटिक्स, प्रकाशक– सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000.
18.फरीद काजमी, द पोलिटिक्स ऑफ इंडियाज कंवेशनल सिनेमा, प्रकाशक– सेज पब्लिकेशन, दिल्ली, 1999.
19.हंस, टेलीविजन विशेषांक, जनवरी, प्रकाशक– अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 2001.
20.नया ज्ञानोदय (मीडिया विशेषांक, अंक–83), जनवरी, प्रकाशक– भारतीय ज्ञानपीठ, 2010.
21.इम्पैक्ट, प्रकाशक– एक्सचेंज फॉर मीडिया ग्रुप पब्लिकेशन, मुंबई।
22.दीवान–ए–सराय 01, मीडिया विमर्श, प्रकाशक– सरायः नव संचार पहल, विकासशील समाज अध्ययन पीठ का कार्यक्रम, दिल्ली, 2002.
23.योजना, प्रकाशक– प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
24.विदुर (हिंदी एवं अंग्रेजी), प्रकाशक– प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, दिल्ली।
25.भारत, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2009, 2010, 2011.

वेबसाइटः

1.www. publicationdivision.nic.in
2.www. tvguide.com
3.www. mediaresearch.com tvnet.com
4.www. internetworldstats.com
5.www. indiantelevision.com
6.www. cable.quest.com
7.www. exchange4media.com
8.www. tvchakra.com
9.www. tv4india.com
10.www. hansmonthly.com

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net